3

अजंता एवं उत्तर-अजंता चित्रकला

पिछले पाठ में हमने सिंधु घाटी सभ्यता की चित्रकला के बारे में जाना। इस पाठ में हम अजंता और उत्तर अजंता की चित्रकला के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। गुप्त काल का उदय एक ऐसे समय मे हुआ जो सुव्यवस्थित, विकासशील एवं सुसंस्कृत था। विज्ञान, एवं साहित्य के क्षेत्र में अदभुत कार्य किए। इसी कारण गुप्त काल भारतीय कलाओं का स्वर्णिम युग कहलाता है।

चन्द्रगुप्त प्रथम सन् 320 ईस्वी में सिंहासन पर आसीन हुए। उन्होंने लिच्छवी वंश की राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया। उसके पुत्र समुद्रगुप्त (335-375) ने गुप्त साम्राज्य की बागडोर संभाली तथा उसके उपरान्त चन्दगुप्त द्वितीय (375-405) जो विक्रमादित्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। अजंता की गुफाओं के अधिकांश चित्र गुप्त व वाकाटक काल में ही बनाए गए।

भारत की सर्वाधिक प्रसिद्ध चित्रकृतियां अजंता की गुफाओं से हैं। अजंता की गुफाएं महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिला मुख्यालय से साठ मील उत्तर-पूर्व में वाघोरा नदी जो कि ताप्ती नदी की एक सहायक नदी है, के घुमावदार किनारे पर स्थित है। इन गुफाओं का नाम यहाँ पास ही स्थित अजिंठा गांव के नाम पर पड़ा। अजंता की गुफाएं लगभग 260 फीट ऊंची चट्टानी पहाड़ी को काट कर बनाई गई हैं, ये गुफाएं लगभग 540 गज लम्बाई में फैली हुई हैं। एक अधूरी बनी गुफा को मिलाकर यहाँ कुल तीस गुफाएं बनाई गई हैं। इनमें से पाँच गुफाएं (9, 10, 19, 26 व 29) चैत्य गुफाएं हैं जिनमें पूजा अर्चना की जाती थी। अन्य गुफाएं विहार कहलाती हैं जिनमें बौद्ध भिक्षु रहा करते थे। अजंता गुफाओं की खोज 1891 ईसवीं में मद्रास रेजीमेंट के अधिकारियों ने की थी। उनमें से एक मेजर जॉन स्मिथ था। अजंता के संबंध में पहली रिपोर्ट 1824 ईसवीं में ले, जे.ई. अलैक्जैन्ड्रा ने रॉयल एशियाटिक सोसायटी को भेजी थी।

अजंता में गुफाओं की दीवारों, छतों तथा खंभों आदि सभी स्थानों को चित्रों से अलंकृत कर दिया गया है। चित्रकारों ने यहाँ बौद्ध कला की महान वीथियां तैयार की हैं जिनमें बुद्ध के जीवन की घटनाओं में दृश्य, जातक कथाओं में वर्णित बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियां तथा पशु-पक्षी और बेल-बूटों के मोटिफ चित्रित किए गए हैं। प्रमुख जातक कथाएं, जिनका यहाँ चित्रण किया

गया है वे हैं, छदन्त जातक, हस्ति जातक, वेसन्तर जातक, महाकपि जातक- 11, मातृपोषक और सम जातक हैं।

भारत में बौद्ध कला तथा वास्तुशिल्प का एक अन्य अनुपम उदाहरण मध्यप्रदेश में पाई गई बाघ गुफाएं हैं। ये गुफाएं माण्डु से लगभग 50 कि. मी. पश्चिम में एक चट्टानी लंबवत पहाड़ी में स्थित हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- इस काल के मुख्य शासकों को पहचान कर उनका उल्लेख का सकेंगे;
- अजंता की गुफाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- अजंता की गुफाओं की खोज कब और किसने की इसका प्रस्तुतीकरण कर सकेंगे;
- चित्रकारी हेतु चित्रभूमि कैसे तैयार की जाती थी, इसकी व्याख्या कर सकेंगे;
- अजंता-चित्रों में प्रयुक्त रंगों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- जातक कथाओं के विषय तथा उनके नाम का वर्णन कर सकेंगे;
- अजंता के गुफा-चित्रों की रचना पद्धति के बारे में लिख सकेंगे।

3.1 बोधिसत्व अवलोकितेश्वर

पहले यह आवश्यक है कि हम प्रसिद्ध चित्रकृति पद्मपाणि बोधिसत्व के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

यह अजंता की सर्वाधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय चित्रकृति है। इस चित्र में बोधिसत्व को अवलोकितेश्वर बोधिसत्व रूप में चित्रित किया गया है। अवलोकितेश्वर बोधिसत्व करूणावतार हैं जिन्होंने विरोधी भाव से मुक्ति को धर्म माना। बुद्ध, धर्म और संघ-तीन रत्न माने जाते हैं। बौद्ध धर्म में सामूहिक जाप है-

बुद्धम शरणम् गच्छामि
धर्मम शरणम् गच्छामि
संघम शरणम् गच्छामि

चित्र 3.1: पद्मपाणि बोधिसत्व

शीर्षक	:	**बोधिसत्व अवलोकितेश्वर (पद्मपाणि बोधिसत्व)**
माध्यम	:	भित्तिचित्र, टेंपरा (चित्रणविधि)
काल	:	पाँचवी सदी ईसवी का उत्तरार्द्ध
गुफा क्रमांक	:	प्रथम

सामान्य परिचय

बोधिसत्व अवलोकितेश्वर नामक यह प्रसिद्ध चित्र गुफा क्रमांक एक की पूर्वी दीवार पर चित्रित है। बोधिसत्व एक अत्यंत सुन्दर और मोती जड़ित मुकुट धारण किए हुए हैं तथा उनके काले बाल गरिमामय ढंग से नीचे लटके हुए हैं। उनके शरीर का ऊपरी भाग वस्त्रमुक्त है। कानों में स्वर्ण कुण्डल हैं तथा बाजुओं में बाजूबंद धारण किए हुए दिखाए गए हैं। उनकी आँखे आधी खुली हुई हैं। भौंहे, जिनकी सहायता से मुख मुद्रा के भाव दर्शाए गए हैं, सामान्य रेखाओं से चित्रित हैं।

अजंता के चित्र अपने आप में परिपूर्ण फ्रेस्को नहीं हैं। मूल फ्रेस्को चित्रों में चित्रकारी उस समय की जाती है जब चित्रित की जाने वाली सतह (धरातल) पूर्णत: सूख न पाई हो। लेकिन अजंता चित्रों में चित्रकारी टैम्प्रा अर्थात 'ड्राई फ्रेस्को' पद्धति से की गई है और बुनियादी रंगों व सामग्री का प्रयोग किया गया है। यहाँ शिल्प-सूत्र में वर्णित पाँच बुनियादी रंगों - लाल गेरू, पीली मिट्टी, चिमनी धुएँ से तैयार काला, नीला तथा चुने अथवा खड़िया से प्राप्त सफ़ेद रंग का प्रयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न 3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. पद्मपाणि बोधिसत्व चित्र चित्रित किया गया है :

   (क) गुफा नं. 1 में (ख) गुफा नं. 2 में

   (ग) गुफा नं. 12 में (ख) गुफा नं. 13 में

2. चित्र का शीर्षक अथवा विषय क्या है :

   (क) भगवान बोधिसत्व (ख) बोधिसत्व अवलोकितेश्वर

   (ग) लार्ड बोधिसत्व (ख) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3.2 अप्सरा

प्रिया शिक्षार्थियों! अब आप अजंता गुफाओं की सुंदर चित्रकृतियों में पाई जानेवाली महिला आकृति के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

अजंता के चित्रकारों ने नारी-सौंदर्य के अनेक रूप चित्रित किए हैं। इनमें सामान्य औरतें, राजघराने की स्त्रियाँ, दरबारी स्त्रियां, नृत्यांगनाएँ और अप्सराएँ अथवा परियाँ सम्मिलित हैं।

चित्र 3.2: अप्सरा

शीर्षक : **अप्सरा**

माध्यम : भित्तिचित्र, टैम्प्रा

काल : पाँचवी सदी ईसवीं का उत्तरार्द्ध

गुफा क्रमांक : सत्रह

सामान्य परिचय

अजंता के चित्र कला के छह अंगों पर आधारित हैं। ये अंग हैं- रूपभेद, (आकारों की भिन्नता) प्रमाण (उपयुक्त अनुपात), भाव (भावों की प्रस्तुति), लावण्य-योजना (सौन्दर्य या शोभा का समावेश), सादृश्य (समानता) तथा वर्णिका भंग (रंग-संयोजन)। अजंता के चित्रकारों ने मानव-आकृतियों, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों की आकृतियों की जटिलताओं को प्रदर्शित करने में पूर्ण दक्षता प्राप्त की थी तथा उन्होंने इनके चित्रण में अपार कल्पनाशीलता से काम लिया है। इन चित्रकारों को न केवल व्यक्तिगत आकृतियों के अंग व अनुपातों पर नियंत्रण था, बल्कि वे इन आकृतियों को सामूहिक रूप से भी सुन्दरतापूर्ण ढंग से संयोजित करते थे।

अप्सरा नामक चित्र अजंता में चित्रकारों द्वारा बनाई गई एक श्रेष्ठ कृति है। उसका शरीर गहरे भूरे रंग का बनाया गया है। उसके सिर पर एक अलंकृत पगड़ी, गले में मोतियों के हार तथा कानों में कुण्डल के आकार की बालियाँ हैं। उसने अपने दोनों हाथों में वाद्ययंत्र लिया है। अपनी कलाइयों में सुंदर ढंग से उत्कृष्ट कड़े पहने हुए हैं। उसके स्वप्निल नेत्र अधखुले हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए :

1.	माध्यम	(क)	गहरा भूरा
2.	अप्सरा का वर्ण	(ख)	भित्तिचित्र
3.	अप्सरा लिए हुए है	(ग)	खड़ताल

3.3 छत की सजावट

बुनियादी सूचना

अजंता की गुफाओं की सज्जा-चित्र तथा मूर्तिशिल्प दोनों ही विधाओं से की गई है तथा कलाकारों ने छत की सज्जा को भी उतना ही महत्व दिया है जितना दीवारों के अलंकरण को।

छत की सज्जा में मानव-आकृतियों के साथ पशु-पक्षी तथा बेल-बूटों का भी प्रयोग किया गया है। छत को बुद्ध की आकृति से ढक दिया गया है।

चित्र 3.3: छत की सजावट

शीर्षक	:	**छत की सजावट**
माध्यम	:	भित्तिचित्र, टैम्प्रा
काल	:	छठी सदी ईसवी का उत्तरार्द्ध
गुफा क्रमांक	:	दो

सामान्य परिचय

चित्रकारी आरंभ करने से पूर्व चित्रकार चट्टान की सतह को तैयार करते थे। गुफा की छत तथा दीवारों पर सर्वप्रथम मिट्टी में चावल का भूसा, गाय का गोबर और गोंद मिलाकर तैयार किए गए गारे का लेप किया जाता था। इसके ऊपर चूने का लेप लगाकर उसे सावधानीपूर्वक चिकना किया जाता था तथा इस पर पॉलिश की जाती थी। इस प्रकार तैयार की गई सतह पर चित्रकारी की जाती थी। आकृतियों की बाह्य रेखाएँ गहरे भूरे अथवा काले रंग से चित्रित की जाती थी जिनमें बाद में सूखी सतह पर विभिन्न रंग भरे जाते थे। छत पर किए गए अलंकरण का यह एक बहुत की सुन्दर उदाहरण है जो छठी सदी में बनाई गई गुफा संख्या 2 में है। गुफा की छत पर चित्रित किए पैनलों एवं बॉर्डरों में हंस, पक्षी तथा विद्याधर युगल, पवित्र शंख, कमल व कलिकाएँ, कमल गट्टे और कमल नाल बनाए गए हैं। कमल का कली रूप, पूर्व विकसित कमल रूप तथा

कमल-पत्रों के विस्तृत संयोजन से चित्रकारों की अलंकरण हेतु विभिन्न कलात्मक पैटर्न रचित करने की क्षमता उजागर होती है। बुद्ध आकृति की पुनरावृत्ति से रचित यह एक सुन्दर सज्जा है। चित्रित पैनल अनेक वर्गाकार खण्डों में विभक्त हैं।

पाठगत प्रश्न 3.3

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. छत की सजावट चित्रकृति में ..... माध्यम का उपयोग है।

2. बड़े पैनल और बार्डर ....., ..., ... आदि से रंगे गए हैं।

3.4 बाघ गुफा

पाठ के इस अंश में हम बाघ गुफा के बारे में जानेंगे।

बुनियादी सूचना

यद्यपि अजंता के चित्रकारों ने सामान्य जन-जीवन के उत्सवों और एवं समारोहों का मनोहारी चित्रण किया हैं। सामान्य रूप से देखें तो इनमें चित्रकार की गहरी निरीक्षण-शक्ति का पता चलता है। अजंता में इस प्रकार की अनेक रचनाएँ हैं जिनसे धर्म निरपेक्ष जीवन प्रदर्शित होता है।

चित्र 3.4: डांसिंग पैनल

शीर्षक : **डांसिंग पैनल**

माध्यम : भित्तिचित्र

काल : सातवी सदी ईसवीं

गुफा क्रमांक : चार, बाघ, मध्य प्रदेश

सामान्य परिचय

बौद्ध धर्म की समर्पित बाघ की पाँच गुफाएँ, मध्य प्रदेश के धार जिले की कुक्षी तहसील में बाघ गाँव से लगभग सात किलोमीटर दूर बागिनी नदी के किनारे स्थित हैं। यहाँ भिक्षुओं के रहने हेतु विहार हैं जिनके मध्य में एक बड़ा हॉल है जिसके पिछले हिस्से में एक बौद्ध स्तूप बना हुआ है। यह हॉल एक चैत्य है जो पूजा-अर्चना हेतु प्रयुक्त होता था। इन सभी पाँच गुफाओं में चौथी गुफा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसे रंगमहल कहा जाता है। बाघ गुफाओं में चित्रित प्रसिद्ध चित्र की शैली अजंता की गुफा क्रमांक एक और दो में बने चित्रों के समान है, परन्तु बाघ गुफाओं के चित्रों में आकृतियों को अधिक दक्षता से दिखाया गया है। मानव-आकृतियों की शारीरिक भंगिमाएँ और उनका संयोजन बहुत की कलात्मक है। इन चित्रकृतियों में दरबारी नर्तकों के प्रदर्शन को दिखाया गया है।

वास्तव में, आज बाघ गुफाओं में जो चित्र देखने हेतु बचे हैं वे उस समय यहाँ की दीवारों तथा छतों पर की गई अपूर्व चित्रकारी की केवल एक झलक मात्र ही प्रस्तुत करते हैं। यहाँ की गई चित्रकारी की शैली और इसके वास्तुशिल्प के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह बौद्ध गुफाएं लगभग सातवीं सदी ईसवी में बनाई गई होंगी। परन्तु यहाँ से प्राप्त एक ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार यहाँ की तीन गुफाएँ चौथी और पाँचवी सदी ईसवी की हैं। वर्तमान में यहाँ मूलतः बनी नौ गुफाओं में से पाँच गुफाएं ही बची हैं। बाघ गुफाओं के खंडहर चट्टान को काटकर बनाए गए प्राचीन भारतीय वास्तुशिल्प के अपूर्व उदाहरण के रूप में आज भी विद्यमान हैं।

इस मनमोहक दृश्य के कारण ही यह गुफा 'रंग महल' के नाम से प्रसिद्ध है। इस चित्र में सुन्दर अर्धनग्न नर्तकियाँ राज दरबार में विशेष नृत्य करती हुई दिखाई देती हैं। इसमें नृतक मंडल एक वृत्ताकार में नृत्य करते हैं। करतालों से लय तथा पगध्वनि मिलाते हैं। इस चित्र में युवतियों के केश विन्यास तथा रंग बिरंगे वस्त्र विशेष उल्लेखनीय हैं जिनमें लम्बी बाहों वाली तथा फूल कढ़ी हुई ऊपर अधोवस्त्र पहनी हैं। बाई ओर सात युवतियों के मध्य में विशिष्ट वस्त्रों वाली एक नर्तकी नृत्य कर रही है। अन्य युवतीयों में से एक मृदंग बजाने वाली के नग्न शरीर पर मृदंग लटकाने की डोरिया स्पष्ट दिखाई दे रही है। तथा मृदंग के पास उसके बायें हाथ की उठी हुई उंगली बड़ी ही कुशलता से चित्रित की गई है। निराले वस्त्रों में दूसरी ओर भी एक आकृति चित्रित है। इन दोनों को देखने से प्रतीत होता है कि ये दोनों कोई विदेशी महिलाएँ हैं। इस चित्र से यह प्रतीत होता है कि राज दरबार में प्रशिक्षित नृतकों का समूह होता था। इस समूह में विदेशी नर्तकियाँ भी होती थीं।

इस चित्र में चित्रित यौवनपूर्ण नर्तकियाँ, उनके वस्त्र तथा केश-विन्यास अनेक प्रकार के वाद्य यन्त्र तथा राज दरबार की पृष्ठभूमि उस समय की प्रगति एवं कला की श्रेष्ठता को प्रस्तुत कर रही हैं।

पाठगत प्रश्न 3.4

1. बाघ गुफाओं में चित्रांकन की कौन-सी पद्धति प्रयुकत की गई है?
2. बाघ गुफाएँ किस राज्य में स्थित हैं?
3. बाघ में मूलतः कितनी गुफाएं थीं?

क्रियाकलाप

किन्हीं पाँच गुफाओं का उल्लेख कीजिए जिनमें चित्र मिले हैं। साथ ही उनके विषय भी लिखिए।

गुफा सं.	चित्र	विषय

आपने क्या सीखा

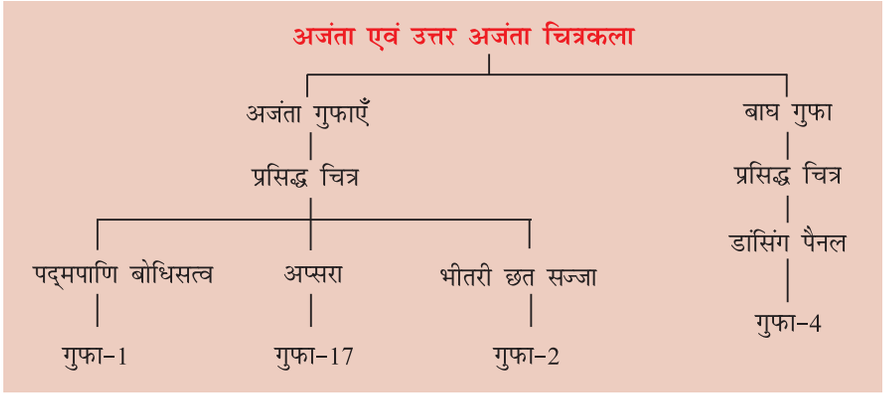

सीखने के प्रतिफल

शिक्षार्थी

- किसी भी प्रकार की दीवार और सजावट बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शैली और फर्श के रूपों का उपयोग करते हैं।
- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य के साथ अजंता और उत्तर अजंता कला की पृष्ठभूमि का वर्णन करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. गुप्तकाल को कला के इतिहास में स्वर्णकाल क्यों कहा जाता है?
2. अजंता के चित्र किस काल में बने थे?
3. कौन-सा शासक विक्रमादित्य के नाम से जाना जाता है और क्यों?
4. गुप्त काल के कौन-कौन से चरण हैं?
5. अजंता की गुफाएँ कहाँ स्थित हैं?
6. अजंता गुफाओं की खोज कब और किसने की?
7. अजंता में कौन-कौन सी चीजें हैं?
8. जातक कथाओं में क्या है?
9. 'शिल्प-सूत्र' में कौन से रंग प्रयुक्त हुए हैं?
10. अजंता की दीवारों को चित्रकारी के लिए किस प्रकार तैयार किया गया था?
11. 'अपस्रा' की त्वचा का रंग कौन-सा है?
12. 'अप्सरा' अपने हाथ में क्या लिए हुए है?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. (क) गुफा क्रमांक 1 में।
2. (ख) बोधिसत्व अवलोकितेश्वर

3.2

1. माध्यम — भित्तिचित्र
2. अप्सरा का वर्ण (रंग) — गहरा भूरा
3. अप्सरा लिए है — खड़ताल

3.3

1. भित्ति चित्र
2. पक्षी, विद्याधर युगल, पवित्र शंख

3.4

1. टैम्प्रा
2. मध्य प्रदेश
3. नौ

शब्दकोश

महायान	बौद्ध धर्म का एक पंथ जिसमें बुद्ध को मानव रूप में दर्शाया जाता था।
हीनयान	बौद्ध धर्म का एक पंथ जिसमें बुद्ध को मानव रूप में दर्शाना वर्जित था।
जातक	बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ
चैत्य	वे गुफाएँ जिनमें बौद्ध भिक्षु पूजा करते थे।
विहार	वे गुफाएँ जिनमें बौद्ध भिक्षु रहते थे।